गर्व से कहें हम अग्रवाल हैं

मेहनत व लगन से अपने काम में जुटे रहने के कारण अग्रवाल समाज ने व्यवसाय के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान बनाया है। आज हर क्षेत्र जैसे इंजीनियरिंग, मेडिकल साइंस, पत्रकारिता, शिक्षण, शोध कार्य, प्रशासनिक सेवा, सेना, न्यायविद, वैज्ञानिक इत्यादि में अग्रवालों ने सर्वोच्च शिखर पर पहुंचकर सम्मान प्राप्त किया है। दान धर्म की भावना से जितना अग्रवाल समाज सराबोर है, उसका सबूत तो देश के कोने–कोने में समाज के दानवीरों द्वारा बनवाए गए विश्रामगृहों, अस्पतालों, क्रीड़ा संस्थानों, प्याऊ, उद्यानों व अन्य सामाजिक उपयोग के सार्वजनिक संस्थानों से मिलता है। हम भारत के उद्योग व्यवसाय के नियंता हैं। हमने भारत के विविध स्थानों पर जाकर अपनी सूझबूझ, लगन तथा व्यवहार कुशलता से व्यापार व अन्य कार्य करके भारतवर्ष में ही नहीं, विदेशों में भी अपना नाम कमाया है। यही एकमात्र समाज है, जिसने बिना किसी जातिवाद या भेदभाव के देश की प्रगति में समान रूप से योगदान दिया है।

भारतवर्ष का अग्रवाल समाज एक अत्यंत विकसित एवं प्रबुद्ध समाज है फिर भी न जाने क्या अपने आज को बनिया, मारवाड़ी, सेठ कहलाते में कतराते हैं, हीन भावना महसूस करते हैं क्यो ? क्या हमने कोई गलत काम किया है, किसी से कुछ लिया है, भीख मांगी है, किसी का गला काटा है, चोरी की है या डाका डाला है – नही, कतई नहीं। फिर ऐसा क्यों हैं ? हमें गर्व से कहना चाहिए हम अग्रवाल हैं। सुबह से देर रात तक अपने व्यवसाय में लगे रहने वाला अग्रवाल मेहनत करके पेट भरता, परिवार चलाता है, साथ ही अपने संचय धन से जरूरतमंद की मदद करके कल्याण कार्यों में लगा रहता है। देश के करोड़ो लोगों को अपने व्यवसाय के माध्यम से रोजगार देता है। सरकार को व्यापार के माध्यम से करोडो, रुपये का टैक्स के रूप में राजस्व देता है। साथ ही प्राकृतिक विपदा, बाढ़, भूकम्प, महामारी के समय यह समाज हमेशा मुसीबत के मारों की मदद में अग्रणी रहता है। प्रत्येक सरकार चुनाव के समय इस समाज के चंदे के रूप में सबसे ज्यादा सहयोग लेती है। उसके बावजूद देखा गया है कि इस समाज के लोगों को उचित सम्मान नहीं दिया जाता है। अधिकारी वर्ग हमेशा इनको लूटने और भयाक्रांत करने में लगा रहता है क्यो? आज आवश्यकता है कि अग्रवाल समाज एकजुट होकर संगठित रहे, अलग–अलग रहने से अस्तित्व बनाए रखना संभव नहीं है। एकजुट न होने का परिणाम है कि हमारे टुकड़े खाने वाला ही हम पर गुर्राता है। सत्ता के शीर्ष पर बैठे देश के कर्णधार नेता, अधिकारी भी समाज पर छींटाकशी व निराधार लांछन लगाते रहते हैं, क्योंकि हम नम्र, सहनशील हैं व अवने व्यापार काम से ही मतलब रखते हैं। हमारे प्रतिवाद नहीं करने का खामियाजा हमारा पूरा समाज भुगतता है। जरूरत है आज फालतू लांछनो, आरोपों, छींटाकशी का डटकर मुकाबला करने के लिए संगठित होकर हम आगे आएं।

अतः आज के राजनीतिक परिदृश्य व समय की मांग को देखते हुए अग्रवाल समाज को अपने मतभेद को भुलाकर एक हो जाना चाहिए। समाज के प्रर्वतक महाराजा श्री अग्रसेन जी की हम स्वाभिमानी संतान अपने कठिन परिश्रम, लगन, दान, धर्म, त्याग, समर्पण की भावना व महालक्ष्मी के आर्शीवाद से लक्ष्मी पुत्र की पदवी पाते है, किसी की मेहरबानी या भीख से नहीं, तो फिर क्यों नहीं गर्व से कहें कि हम अग्रवाल हैं।